वेदोक्त दीक्षान्त-उपदेश
तैत्तिरीयोपनिषद् से शिक्षाध्याय- वल्ली

ॐ। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् । देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् ।। १।।	ॐ। सत्य बोले। धर्म का आचरण करें। स्वाध्याय में आलस्य न करें। गुरु के लिए प्रिय धन लाकर दें और सन्तान परम्परा (सृष्टि प्रक्रिया) को मत तोड़िये। सत्य बोलने में प्रमाद न करें। धर्माचरण से प्रमाद न करें। कुशलतापूर्वक कार्य करने में प्रमाद न करें। धन-सम्पत्ति अर्जित करने में प्रमाद न करें। अध्ययन और अध्यापन में आलस्य न करें। देव कार्य अर्थात् यज्ञादि कार्यों में तथा माता पिता की सेवा में आलस्य न करें।।१।।	मातृदेवो भव । पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकँ सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।।२।।	माता को देवता के समान समझें। पिता को देवता के समान समझें। आचार्य को देवता के समान समझें। अतिथि को देवता के समान समझें। जो हमारे पवित्र एवम् अनिन्दित कर्म हैं, उनका आचरण करें। दूसरो का नही। जो हमारे सुचरित्र हैं, तुम उनका आचरण करो। दूसरो का नही।।२।।
दे के त्यास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणाः तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।।३।।	जो हमसे श्रेष्ठ विद्वान् हैं, तुम उनको आसन आदि देकर सन्तुष्ट करें। श्रद्धापूर्वक दान दें। अश्रद्धा से दान न दें। समर्थ होने पर ही दें। लज्जापूर्वक दें। डर कर दें। विचारपूर्वक दें अर्थात् सुयोग्य पात्र को दान दें।।३।।	अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये यत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथाः। अथाभ्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः । एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्।।४।।	यदि तुमको कर्म करने में कोई संदेह हो या आचरण करने में कोई संदेह हो तो जहाँ जो विवेकशील विद्वान् हों, जो स्वयं कर्मयुक्त हों या कर्म नियुक्त हों, जो नीरस या रूखे स्वभाव वाले न हों और जो धर्म के प्रति इच्छा रखते हों तथा वे जैसे आचरण करें, वैसे तुम भी करो। अन्य विवादास्पद विषयों में भी जो वहाँ विवेकशील विद्वान् हों, जो स्वयं कर्मयुक्त हों या कर्म नियुक्त हों, जो नीरस या रूखे स्वभाव वाले न हों और जो धर्म के प्रति इच्छा रखते हों तथा वे उन विवादास्पद विषयों में जैसे आचरण करें, उन विषयों में तुम भी वैसा करो। यही आदेश है। यही उपदेश है। ऐसा ही वेदों और उपनिषदों में वर्णित है। यही अनुशासन है। ऐसा ही आचरण करना चाहिए। यही आचरण के योग्य है।।४।।